पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.टी.)

सत्रीय कार्य
2022

(जनवरी 2022 सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
पाठ्यक्रम 01 से 04 (पी.जी.डी.टी-01 से 04)
सत्रीय कार्य 2022
(जनवरी 2022 और जुलाई 2022 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए चार पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि
पी.जी.डी.टी.-01 अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि	**30.09.2022**
पी.जी.डी.टी.–02 अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष	**30.09.2022**
पी.जी.डी.टी.–03 व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र	**30.09.2022**
पी.जी.डी.टी.-04 प्रशासनिक अनुवाद	**30.09.2022**

कृपया सभी सत्रीय कार्य 30 सितंबर 2022 से पूर्व अथवा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि अवश्य भेज दें। ध्यान दें कि सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि में परिवर्तन किया जा सकता है। सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य–सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....
नाम : .....
पता : .....
.....

पाठ्यक्रम कोड :.....
पाठ्यक्रम का शीर्षक : .....
सत्रीय कार्य कोड : ..... हस्ताक्षर :.....
अध्ययन केंद्र का नामः ..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बाईं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200-250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।
- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

पी.जी.डी.टी-01
अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी-01
सत्रीय कार्य कोड : पीजीडीटी-1/टीएमए/2022
अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए : 6 X 10 = 60

i) अनुवाद का अर्थ बताते हुए उसके विभिन्न प्रकारों की विस्तार से चर्चा कीजिए।
ii) अनुवाद की पाश्चात्य परंपरा की विस्तार से चर्चा कीजिए।
iii) 'भारतीय साहित्य के विदेशी भाषाओं में प्रचुर अनुवाद हुए हैं।' सोहरण उत्तर दीजिए।
iv) कोश कितने प्रकार के होते हैं? विभिन्न भाषिक कोशों का परिचय दीजिए।
v) सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में बरती जानी वाली सावधानियों का विवेचन कीजिए।
vi) अननुवाद्यता की अवधारणा स्पष्ट करते हुए इसके विविध आयामों की सोदाहरण चर्चा कीजिए।
vii) पुनरीक्षण से क्या अभिप्राय है? अनुवाद में इसका क्या महत्व है? उपयुक्त उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट कीजिए।
viii) अनुवाद के मूल्यांकन की विभिन्न पद्धतियों की चर्चा कीजिए।
ix) लिप्यंतरण और लिप्यंकन क्या है? सामान्य अनुवाद और लिप्यंतरण में अंतर स्पष्ट कीजिए।
x) अनुवाद प्रक्रिया के विविध सोपान कौन–कौन से हैं? विस्तार से चर्चा कीजिए।

2. निम्नलिखित शब्दों को कोश के क्रम में लिखिए : 5x2=10

a) परीक्षा, प्रति, पूर्ण, प्राचीन, प्रथम, पूर्णाहुति, प्रांजल, पृथ्वी, पिपासा, पूँजी, पिचकारी, परांदा, प्लेग, पद्धति, पुनरीक्षण

b) layout, lamb, ladder, landmark, luggage, landlady, lure, lucre, luminary, laboratory, latter, language, laugh, league, lecture

3. कम से कम पाँच महत्वपूर्ण कोशों के नाम बताइए। 5

4. निम्नलिखित का रोमन/देवनागरी में लिप्यंतरण कीजिए : 5

संघर्ष	persuasion
सैद्धांतिकी	Bengal
रणनीतियाँ	longitude
विशिष्टता	indigenous
अध्ययन	education

5. निम्नलिखित हिन्दी मुहावरों/लोकोक्तियों के अंग्रेजी समतुल्य लिखिए : 5

i) अपना उल्लू सीधा करना
ii) अपने पैरों पर खड़े होना
iii) चार चाँद लगाना
iv) एक अनार सौ बीमार
v) अधजल गगरी छलकत जाय

6. निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के हिंदी रूप लिखिए : 5

(i) Once in a blue moon
(ii) Apple of eye
(iii) Better late, than never
(iv) Actions speak louder than words
(v) All that glitters is not gold

7. नीचे दिए गए अंग्रेजी पाठ और उसके हिंदी अनुवाद को सावधानी से पढ़िए और अनूदित पाठ का पुनरीक्षण कीजिए: 10

मूल :

The name 'Tamil Nadu' literally means "The Land of the Tamils'. Located in the south-eastern extremity of the Indian peninsula, Tamil Nadu occupies a vantage geographical position as its coats opens up to the Bay of Bengal to the east and the Indian Ocean to the south. At its southern most point, the Arabian Sea meets these vast expanses of water making it a unique confluence of three seas. Similarly, the Eastern and the Western Ghats meeting at the Nilgiri Hills in its westernmost part provide a distinctive geographical outline to the State. The State comes seventh in terms of population in the country as per the 2011 Census. Mostly dependant on the monsoons, it receives significant rainfall from June to September (southwest monsoon) and from October to December (northeast monsoon). These monsoonal rains also feed rivers like the Kaveri (Cauvery), Palar, Ponnaiyar (South Pennar), Vaigai, Thamirabarani, which water the State and sustain its agriculture and industry. The Kaveri delta, historically famous for paddy cultivation, especially provides the backbone to the State's agriculture and in many ways defines its hallowed cultural ethos and achievements. Mighty empires like that of the Cholas' had been built up with this area serving as their core. Not surprisingly, therefore, the river is also adored by some as 'the Ganga of the South'.

हिंदी अनुवाद :

तमिल नाडु नाम का अर्थ है तमिलों की ज़मीन। भारतीय उपद्वीप के पूरे दक्षिण–पूर्व में स्थित तमिल नाडु भौगोलिक दृष्टि से बहुत फायदेमंद जगह पर स्थित है क्योंकि इसके समुद्र तट पूर्व में बंगाल की खड़ी की ओर और दक्षिण में हिन्द महासागर की ओर खुलते हैं। धुर दक्षिण में अरब सागर का मिलन इन दो समुद्रों से होता है जो इसे तीन समुद्रोणा का एक अद्‌भुत संगम बनाता है। इसी तरह, धुर पश्चिम में नीलगिरी की पहाड़ियों पर मिलने वाले पूर्वी और पश्चिमी घाट इस राज्य को एक मुख्य भौगोलिक आकार देते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार तमिल नाडु भारत का सातवाँ सर्वाधिक संख्या वाला प्रदेश है। अधिकांशतः वर्षा ऋतु पर निर्भर होने वाले इस प्रदेश में जून से लेकर सितंबर तक (दक्षिणपूर्वी मानसून) और अक्तूबर से लेकर दिसंबर (उत्तरपूर्वी मानसून) तक कमाल की बारिश होती है। मानसून से होने वाली इस वर्षा से कावेरी, पलार, पोन्नाइयर (दक्षिणी पेन्नार), वैगई, जैसी नदियां जल प्राप्त करती हैं जिससे राज्य को जल प्रदान किए जाने के साथ साथ कृषि और उद्योगों की जल पूरा होती है। ऐतिहासिक रूप से धान की खेती के लिए प्रसिद्ध कावेरी राज्य की कृषि को जीवन प्रदान करता रहता है और साथ ही कई तरीकों से तमिल नाडु के पवित्र सांस्कृतिक चरित्र और उपलब्धियों को परिभाषित करता है। इसीलिए इसमे कोई आश्चर्य तो होना ही नहीं होता कि कावेरी नदी को दक्षिण की गंगा कहकर जाना जाता है।

*****

पी.जी.डी.टी–02
अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–02
सत्रीय कार्य कोडःपीजीडीटी–02/टीएमए/2022

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए। 8x8=64

   i) वाक् प्रतीक से क्या अभिप्राय है? भाषा की इकाइयों का विवेचन कीजिए।
   ii) 'अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली' पर निबंध लिखिए।
   iii) भाषा मानकीकरण की अवधारणा स्पष्ट करते हुए अनुवाद के संदर्भ में मानकीकरण की उपयोगिता की चर्चा कीजिए।
   iv) 'दूर शिक्षा में अनुवाद' पर एक विस्तृत टिप्पणी लिखिए।
   v) अनुवाद के माध्यम से भाषा विकास के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालिए।
   vi) टिप्पण–प्रारूपण से आप क्या समझते हैं? प्रशासन में इनके अनुवाद की आवश्यकता और उपयोग का विवेचन कीजिए।
   vii) पाठ्य–सामग्री निर्माण में अनुवाद की आवश्यकता का वर्णन कीजिए।
   viii) राजभाषा से क्या अभिप्राय है? स्वतंत्र भारत में राजभाषा के प्रश्न और उसकी सांविधिक स्थिति स्पष्ट कीजिए।

2. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के अंग्रेजी पर्याय लिखिए : 5

   कार्यपालक संपादक, पांडुलिपि, अभियान, तारांकित प्रश्न, लोक संगीत, रोजगार सूचना, ग्रामीण क्षेत्र, कार्य निष्पादन, अनारक्षित रिक्ति, आर्थिक अनुदान

3. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

   cyber crime, deficit budget, customer-friendly, national income, sample survey, freedom fighter, legislative measures, medical examination, materials management, para military personnel

4. निम्नलिखित प्रश्न–पत्र का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 8

INTERNATIONAL RELATIONS : THEORY AND PROBLEMS
Tutor Marked Assigned (TMA)

Note: All questions are compulsory

SECTION-A

Answer the following question in 1000 words each.

1. Distinguish between realist and non-realist approaches to International Relations.
2. Bring out the key arguments of the dependency approach in International Relations.
3. What do you understand by sustainable development?
4. Discuss the feminist vision of human rights and nationalism.
5. Compare the salient features of the Old and New World Order.

SECTION-B

Answer the following question in 750 words each.

6. Discuss the role of the United Nations in shaping and applying concept of self-determination.

7. Examine the Provision of Non-Profile ration Treaty (NPT) and Comprehensive Nuclear Test Ban Treaty (CTBT).

8. How has media influenced international culture?

9. What is the condition of national minorities in Central Asia since the disintegration of the USSR?

10. Briefly explain how indigenous movements have spread in various parts of the world.

5. निम्नलिखित सामग्री का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 9

Politics deals with the distribution of power in society. Political institutions refer to certain kinds of social relations which exist within a particular area. Thus, territorial area is an important aspect in the political process of any society. The territorial structure provides the framework not only for political organization but for other forms of organization as well. However, when we study political institutions we deal with the "maintenance and establishing of order within a territorial framework by the organized exercise of coercive authority through the use or possibility of use of physical force" (Fortes M. and Evans, Pritchard, E.E., 1949) One of the important political institutions in society is state. It has been described as a human community which successfully claims the monopoly of the legitimate use of force within a given territory. State is different from government in the sense that government is the agency which carries out the orders of the state. Thus, we can say that political organization consists of the combination and interrelationship of power and authority in the maintenance of public affairs. In modern complex societies the police and the army are the instruments by which public order is maintained. Those who offend are punished by law. Law is one of the means by which the state carries out its function of social control. There has been a progressive growth of political organization in different societies. As societies have developed from the simple to modern industrial societies, all other aspects of social organization, even political institutions have become more complex. There are stateless societies without any centralized authority. Then there are those societies which have some form of centralized authority and administrative machinery.

6. निम्नलिखित सामग्री का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 9

भारतीय शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में सरकार से इतर हमारे देश की जिन संवैधानिक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है उनमें चुनाव आयोग और उच्चतम न्यायालय आदि के अलावा संघ लोक सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी) भी शामिल है। संघ लोक सेवा आयोग की बात करें तो इसका प्रमुख कार्य सिविल सेवा की विभिन्न परीक्षाओं को संपन्न कराना है। मेरिट के प्रहरी के रूप में कुशलतापूर्वक और निष्पक्ष रूप से कार्य करते हुए यू.पी.एस.सी. ने स्वाधीनता के बाद इस रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह भी एक बड़ी बात है कि अपवादों को छोड़ दें तो अन्य संवैधानिक संस्थाओं के मुकाबले यू.पी.एस.सी. विवादों से भी मुक्त रही है, और देश में एक साख अर्जित की है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से यू.पी.एस.सी. पर हिंदी माध्यम के परीक्षार्थियों द्वारा लगातार सवाल खड़े किए जा रहे हैं। सिविल सेवा परीक्षा के प्रश्नों के हिंदी अनुवाद को लेकर जो विवाद उठते रहे हैं उसपर गंभीरता से विचार किया जाना आवश्यक है।

सवाल है कि सिविल सेवा परीक्षा के प्रश्नों के हिंदी अनुवाद किस तरह के हो रहे हैं? यह जानना भी जरूरी होगा कि अनुवाद की ये समस्याएँ क्या सिर्फ सिविल सेवा परीक्षा तक ही सीमित हैं? और यह भी कि इनका क्या समाधान होना चाहिए?

यह सर्वविदित है कि यू.पी.एस.सी. के द्वारा ही सिविल सेवाओं के विभिन्न पदों जैसे भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई.ए.एस), भारतीय पुलिस सेवा (आई.पी.एस) आदि के अतिरिक्त भारतीय वन सेवा, भारतीय आर्थिक सेवा, भारतीय सांख्यिकी सेवा आदि ग्रुप 'ए' आदि सेवाओं के साथ–साथ ग्रुप 'बी' की सेवाओं के विभिन्न पदों पर नियुक्ति की जाती है। लेकिन देश की सर्वोच्च सेवा – सिविल सेवा – परीक्षा पिछले कुछ सालों से हिंदी माध्यम के परीक्षार्थियों के लिए टेढ़ी खीर बनती जा रही है। यू.पी.एस.सी. की जो परीक्षा पद्धति है, उसके बारे में कहा जाता है कि विभिन्न विषयों के प्रश्न–पत्र मूल रूप से अंग्रेजी में बनते हैं। फिर उनका हिंदी में अनुवाद किया जाता है। इन प्रश्नों के हिंदी अनुवाद को लेकर ही विवाद मचा हुआ है। यह ध्यातव्य है कि पहले भी सामान्यतया प्रश्न–पत्र अंग्रेजी में ही बनते थे, फिर उनका हिंदी में अनुवाद किया जाता था। लेकिन अब लगता है कि अनुवाद में प्रौद्योगिकी का ज्यादा इस्तेमाल हो रहा है। और शायद इसलिए गड़बड़ियाँ हो रही हैं।

*****

पी.जी.डी.टी–03
व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–03
सत्रीय कार्य कोडः पीजीडीटी–03/टीएमए/2022
अधिकतम अंक : 100 अंक

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. सारानुवाद से क्या अभिप्राय है? इसके प्रमुख प्रयोग क्षेत्रों की विस्तार से चर्चा कीजिए। 20

2. निम्नलिखित का हिन्दी में अनुवाद कीजिएः 10
   i) Along with these traditional dresses, the women also wear different kinds of jewellery.
   ii) During India's epic struggle for freedom, several leaders from here played seminal roles.
   iii) Mardani Jhumar is performed during the harvest season with the accompaniment of many musical instruments.
   iv) The word Chhau is derived from the Sanskrit word Chhaya, which means shade, image or mask.
   v) Chanting in Sanskrit and Tibetan language forms an integral part of Ladakh's Buddhist lifestyle.
   vi) What matters is that these texts do not make themselves to be original, and behave as versions of something else.
   vii) Translation of a literary work is a difficult art because ideas can be translated but not the words and their associations.
   viii) Tytler's 'An Essay on the Principles of Translation' is the first work which systematically discusses the principles of translation of poetry.
   ix) There were only a handful of people who were comfortable typing in Hindi on the computer.
   x) The popularity of the project is clearly evident just by checking the visitor statistics.

3. **निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :** 10
   1. काव्य का अनुवाद गद्य में करने से मूल का रसास्वादन संभव नहीं हो पाता।
   2. इस चकाचौंध भरी दुनिया की भी अपनी एक नैतिकता है।
   3. भारत को भूमंडलीकृत हुए एक लंबा समय बीत चुका है।
   4. कथा साहित्य का अनुवाद कविता अथवा नाटक के अनुवाद से किसी भी तरह सरल नहीं है।
   5. अनुवादक को लेखक के मनोभाव और परिस्थितियों से परिचित होना चाहिए।
   6. भारतीय सिनेमा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई–नई उपलब्धियाँ हासिल की हैं।
   7. एनिमेशन में अनुवाद तथा पटकथा–लेखन दोनों ही शामिल होते हैं।
   8. यह एक ऐसा दौर था जब रूस, जापान और चीन जैसे देशों में 'आवारा' फिल्म के गानों के प्रति लोग दीवाने थे।
   9. भारतीय सिनेमा में दृश्य–श्रव्य अनुवाद की दृष्टि से यह एक उत्तम उदाहरण है।
   10. अनुवादक के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपनी क्षमता और सीमा दोनों को पहचाने।

4. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15x2 =30

a) A course designer may have to assume that the course could attract an entire spectrum, from the learner who expects the course to be like a traditional school classroom to the learner who spends more of their time chatting to friends online than speaking to people face to face. Each of these learners needs to be able to participate equally. It is always useful to complete a detailed learner profile which will help in planning. This will help the designer to think through the processes and put themselves in the shoes of the learner at every stage.

Tutors may also have a range of expectations about what will happen in an online learning course. They may view it as a correspondence course where the materials happen to be delivered "via the Internet and their role will involve answering questions and marking assignments; 'they may think this is an exciting way to work with learners'; they may be terrified by the thought of all the email they may now have to answer. These expectations, too, need to be anticipated by the designer.

b) In their development process, the women of the FCHG recognized that timely and accurate information could enhance their thrust towards self-reliance and economic independence as it could, at the same time, provide for their fellow community members access to agricultural and other relevant information critical to their realizing their full potential as farmers, parents, students and workers. The women of the FCHG were not only interested in creating an economic and financial base to strengthen their livelihoods, they were also intent on creating a knowledge-based community through the use of modern information and communication technology (ICT) which they felt would allow them to access information relevant to their daily lives and to link them with the outside world. For them, ICT was not just a teaching tool, but a research instrument and a source of information. This is critical because Fancy community members appreciate the value of education, learning and social progress. In this context, leveraging ICT was now understood as a tool of empowerment and a vehicle of social change.

5. निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 15x2 =30

(क) शेक्सपियर के यूनानी तथा अन्य काव्य–नाटकों के मामले में कविता और नाटक दोनों के अनुवाद की समस्याएँ सामने आती हैं। अनुवाद में पहले तो मूल के अनुरूप या उपयुक्त छंद के चुनाव का ही सवाल उठता है। हिंदी में, अपने मौलिक काव्य–नाटकों के अभाव को देखते हुए, यह अधिक व्यावहारिक होगा कि सघन गद्य में अनुवाद किया जाए अन्यथा पद्यानुवाद में पद्य तो रहेगा पर काव्य निकल जाएगा। शेक्सपियर के अब तक हिंदी में हुए पद्यानुवाद इसके प्रमाण हैं। शेक्सपियर की भाषा में लय और ध्वनियों के संयोग में पात्रानुकूल और संदर्भानुकूल विविधता है। इसे काव्यात्मक गद्य द्वारा अधिक एकाग्रता से रूपायित किया जा सकता है।

नाटकों और उपन्यासों के अनुवाद में एक और तरह की समस्या आती है – विशिष्ट सामाजिक अथवा वैयक्तिक आचार–विचार, संस्कार, कर्मकांड, अंधविश्वास अथवा रूढ़िगत मान्यताओं के पर्यायों या विभिन्न पारिवारिक संबंधों के सूचक पदों–संबोधनों आदि के भाषांतर में। इन्हें मूल रूप में रहने दिया जाए तो भाषा उखड़ी हुई, ऊबड़–खाबड़ या चरित्रहीन अथवा असहज होने लगती है, और अगर अनुवाद किया जाए तो मूल भाव, ध्वनि या अर्थ तक बदल जाने की आशंका रहती है। इन दोनों में से कौन–सा जोखिम उठाई जाए यह बात रचना के स्वरूप और अनुवादक के सामर्थ्य और सौंदर्यबोध पर ही निर्भर है। कोई सामान्य नियम बनाना न संभव ही है और न ही उचित।

दरअसल, अनुवाद–कार्य का बुनियादी सवाल है मूल कृति की शुद्धता की रक्षा और अनुवादक की स्वतंत्रता के बीच अंतर्विरोध। हर अनुवादक को अपने विवेक से इनके बीच संतुलन की तलाश करनी पड़ती है। उनके तनाव को पूरी तरह खत्म करना जरूरी नहीं है, शायद संभव या वांछनीय भी नहीं है। पर उसका एक ऐसा समीकरण जरूर चाहिए कि मूल कृति की अधिक–से–अधिक सृजनात्मक शक्ति और सौंदर्य, उसके रूपगत वैशिष्ट्य और शैली के व्यक्तित्व को भी संप्रेषित किया जा सके और साथ ही अनुवाद बनावटी न लगे।

(ख) शैली का सवाल कई और तरह की चुनौतियाँ पैदा करता है। जैसे, अनुवाद उसी युग की भाषा में होना चाहिए जिसमें मूल कृति लिखी गई थी या समकालीन भाषा में? यानी चौसर या मिल्टन की कविता के लिए कैसी भाषा होनी चाहिए? या फिर, यह भी मुमकिन है कि मूल रचना जिस शैली और भाषा में लिखी गई हो वह विघटित या रूपांतरित हो चुकी हो। बहुत बार उस शैली या भाषा के बारे में मूल्यांकन बदल चुका होता है। ऐसी हालत में क्या उस शैली या भाषा की पुनर्रचना सार्थक या उचित होगी? किन्हीं दो भाषाओं के विकास का क्रम समानांतर नहीं होता, और यह आवश्यक नहीं कि अनुवाद के लिए उपयुक्त शैली या भाषा की पुनर्रचना सार्थक या उचित हागी? किन्हीं दो भाषाओं के विकास का क्रम समानांतर नहीं होता, और यह आवश्यक नहीं कि अनुवाद के लिए उपयुक्त शैली या भाषा का स्तर दोनों भाषाओं में समकालीन पुराने युगों की श्रेष्ठ कृतियों के अनुवाद में शैली और भाषा का चुनाव अनुवादक से सूझबूझ और संवेदनशीलता की माँग करता है।

दरअसल, अनुवाद में मौलिक जैसी सहजता, सुबोधता के साथ सूक्ष्मता का सवाल, अनुवाद की भाषा के अपने सृजनात्मक लेखन की भाषा के रूप में और स्तर से जुड़ा हुआ है। किसी हद तक हिंदी अनुवादों की कमजोरियाँ हिंदी गद्य या हिंदी कविता की अपनी सीमाओं से निर्धारित हैं। आधुनिक हिंदी का अपनी जननी खड़ी बोली के साथ संबंध बड़ा कमजोर और ढीला है और कुछ–कुछ अस्पष्ट भी। इसीलिए उसमें मुहावरों की इतनी कमी है, किसी बोलचाल की भाषा की प्राणवत्ता, उसकी रंगतें और उसकी लय और नाद की सुंदरता भी हिंदी में पूरी तरह ध्वनित अथवा प्रतिफलित नहीं होती। इसीलिए हमारी साहित्यिक भाषा अक्सर तत्सम–प्रधान, संस्कृत–बहुल होती है। वह अक्सर पंडिताऊ भी लगती है और बनावट भी। सिर्फ कुछ पढ़े–लिखे बुद्धिजीवियों में समझी जाने वाली भाषा में सृजनात्मक रचना संभव नहीं। रोज़मर्रा के जीवन में काम में आने वाली बोली की धड़कन जिस भाषा में न हो, वह किसी जीवंत विचार या अनुभव को पूरी संप्रेषणीयता के साथ व्यक्त नहीं कर सकती। अनुवाद में यह कठिनाई कई गुना बढ़ जाती है। अच्छे रचनात्मक लेखन की तरह अच्छे अनुवाद के लिए भी हिंदी में बोलचाल की भाषा की फिर से और पूरी तरह स्वीकृति और प्रतिष्ठा बहुत जरूरी है। कई दृष्टियों से हिंदी में अनुवाद की भाषा की बुनियादी समस्या यही है।

*****

पी.जी.डी.टी–04
प्रशासनिक अनुवाद
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–04
सत्रीय कार्य कोडः पीजीडीटी–04/एएसटी–01(टीएमए)/2022
अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. सृजनात्मक और तकनीकी साहित्य से आप क्या समझते हैं? सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद और तकनीकी अनुवाद में परस्पर तुलना कीजिए। 10

2. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय बताइए : 10

articles of association, brain drain, corrective measures, energy efficiency standard, government affairs, goods and services tax, income and expenditure account, literacy drive, preliminary report, raw product, running commentary, superannuation, service matter, taxpayer identification number, token pay, triennial, unearned income, verified copy, waste prevention, written communication

3. निम्नलिखित अभिव्यक्तियों के हिंदी पर्याय बताइए : 10

i. against public interest
ii. approved as per remarks in the margin
iii. clearance of outstanding cases of pension
iv. concurrence of the finance branch is necessary
v. date and time of receipt
vi. deductions from gross salary
vii. final settlement of accounts
viii. ex-post facto sanction
ix. may please furnish the requisite information
x. reasons for delay be explained

4. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिएः 10X4=40

(A)

GOVERNMENT OF PUNJAB
National Health Mission
Department of Health and Family Welfare, Punjab
Prayas Building, 5th Floor, Sector 38-B, Chandigarh

GENERAL NOTICE INVITING QUOTATIONS
For COVID CARE KIT required for management of COVID-19
Ref No. Tender/Proc-Cov/2020/NHM-8

The National Health Mission-Punjab, Department of Health and Family Welfare, Government of Punjab hereby invites sealed quotations for COVID CARE KIT required for management of COVID-19.

Details of requirements and terms and conditions are available on the website of the NHM, Punjab www.nhm.punjab.gov.in. Sealed quotations clearly mentioning items for which quotations are being submitted must reach the office of Mission director, NHM-Punjab, Room No. 8, Prayas Building 5th Floor, Sector-38-B, Chandigarh by 11th September 2020 (Friday) till 4:00 pm. Only those quotations which are received in the office by above specified date and time will be considered and opened by the Committee of the NHM on same day 4:30 pm at NHM Office.

Quotations received late or through e-mail etc. will not be entertained and will be rejected straightaway.

For further details please visit www.nhm.punjab.gov.in

(B) Taking advantage of the lockdown and reduction in train operation due to the pandemic, the Indian Railways has completed eight major capacity-enhancement works, including the upgradation of the entire 389 km railway line from Jhajha in Bihar to Pandit Deen Dayal Upadhyaya Junction in UP, which is now fit to bear trains running at 130 kmph. Earlier the track could allow trains to run at 110 kmph.

A senior official of South Eastern Railway said the major work done to achieve this feat included upgradation of tracks from 52kg to 60kg rails, upgrades in sleepers, strengthening of bridges wherever required, raising of ballast cushioning and providing multi-aspect colour light signaling with double-distant signaling system. He said all station on the route have been provided with either electronic interlocking or panel interlocking while major junctions have a route relay interlocking system.

He said all unmanned level crossings have been eliminated on this route. "This has helped save time for passengers and with the enhanced line capacity; we can now run more trains. The benefit will be known once the new time table is implemented," said a railway spokesperson. The railways will soon come out with the new "zero-based" timetable for all passenger trains.

Railway ministry officials said the national transporter commissioned three super critical projects, three critical projects and a new 82km port connectivity line to Paradip during the lockdown period. The rail port connectivity from Haridaspur in Odisha will provide a direct route for transportation of coal and iron ore and will also facilitate cargo movement to the port.

(C)

INDIAN NATIONAL SCIENCE ACADEMY
Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110002
www.insaindia.org

DEPUTATION OF INDIAN SCIENTISTS ABROAD UNDER BILATERAL EXCHANGE PROGRAMME

Applications are invited from outstanding scientists/ researchers holding Ph.D degree and having regular positions in recognised S&T institutions/universities and actively engaged in research in frontline areas for deputation abroad during the Calendar year…… in all fields of Science including Engineering, Medicine & Agriculture for short term visits (2-4 weeks for senior scientists) and long term visits (3 months for junior/younger scientists) under the Scientific Bilateral Exchange Pregramme with overseas Academies/Organisations in Austria, Czech Republic, France, Germany, Hungary, Iran, Kenya, Kyrghyz Republic, Mauritius, Morocco, Nepal, Philippines, Poland, Russia, Scotland, Slovak Republic, Republic of Slovenia, Sri Lanka and Turkey.

In addition, the Academy also invites Research Project Proposals from Indian Scientists formulated jointly with the Japanese scientists under INSA-JSPS collaborative Research Programme. The visits of Indian and Japanese scientists could be exchanged within this programme. Research proposals for the financial year…… which may last for three years in all areas of Natural Sciences including Engineering, Medicine & Agricultural Sciences may be submitted to the Academy.

The detailed guidelines and application form may be downloaded from www.insaindia.org. The application duly completed and endorsed by the Head of the Institutions should be submitted latest by …….. to The Assistant Executive Secretary (International), Indian National Science Academy, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110002.

(D)

ANNEXURE IV (For Form-6)

DECLARATION BY STUDENTS LIVING IN HOSTELS/MESSES/ELSEWHERE

(TO BE ATTACHED WITH FORM 6)

SPACE FOR PASTING ONE RECENT PASSPORT SIZE COLOUR PHOTOGRAPH (3.5 CM × 3.5 CM) SHOWING FRONTAL VIEW OF FULL FACE WITHIN THIS BOX

I, ... (NAME IN BLOCK LETTERS),

: son/daughter of.....

.....

address of native place), hereby declare that :—

(a) I am a bonifide student of ..... (name of the institution) and pursuing ..... (details of the course) from ..... (month).....(year) to.....(month).....(year)

*(b) I am presently residing at –

(i) ..... (if residing in hostel/mess, mention Room No./Block No./Block Name, etc. of the hostel/mess).

OR

* (ii) ..... (if residing elsewhere outside the hostel/mess, mention complete postal address of the place of stay outside the hostel/mess).

(c) * I want to be registered in the electoral roll/retain my registration in the electoral roll of my native place at my above-mentioned residential address with my parents/guardian.

OR

*I want to be registered in the electoral roll of the constituency where I am presently residing.

II. I am aware that registration in the electoral roll of more than one constituency or more than once in a constituency is not permitted under the election law and am also aware of the penal provisions of Sec. 31 of the R.P. Act, 1950, which reads as follows :–

"If any person makes in connection with (a) the preparation, revision or correction of an electoral roll, or (b) the inclusion or exclusion of any entry in or from an electoral roll, a statement or declaration in writing which is false and which he either knows or believes to be false or does not believe to be true, he shall be punishable with imprisonment for a term which may extend to one year, or with fine, or with both.

Place :
Date :

(signature of the student)

It is certified that the information given in the declaration at (a) above and the photograph have been verified from the records of the institution and are found to be correct.

Place:
Date :

Signature and seal of the
Head Master/Principal/Registrar/Director/Dean

5. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिएः 10X3=30

क किसी भी देश की सेहत की तस्वीर का अंदाजा इससे लगाया जाता है कि वहाँ शिशुओं और छोटे बच्चों की मृत्यु दर क्या है। इस लिहाज से देखें तो आजादी के बाद से ही भारत में पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर का आँकड़ा इतना चिंताजनक बना रहा है कि कई बार इसका सीधा असर भविष्य पर पड़ने के आकलन के रूप में सामने आने लगे। राष्ट्रीय स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं के मामले में सुधार को लेकर सरकारों की ओर से किए जाने वाले तमाम दावों के बावजूद यही स्थिति लगातार बनी रही। लेकिन पिछले तीन दशकों के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं के मोर्चे पर किए जाने वाले कामों का सकारात्मक नतीजा सामने आया है और अब बच्चों या फिर शिशुओं की मृत्यु दर के मामले में हालत काफी सुधरी है। संयुक्त राष्ट्र की एक ताजा रिपोर्ट के अनुसार भारत में बाल मृत्यु दर में 1990 से 2019 के बीच काफी कमी आई है। 'बाल मृत्यु दर के स्तर एवं रुझान रिपोर्ट – 2020' में बताया गया है कि 1990 में पाँच साल से कम आयु के बच्चों की मौत की संख्या जहाँ लगभग सवा लाख थी, वहीं 2019 में यह कम होकर बावन हजार रह गई।

निश्चित तौर पर बाल मृत्यु दर में इतने सुधार के लिए करीब तीन दशक लगना एक लंबी अवधि है, लेकिन यह भी देखना होगा कि हमारे देश के व्यापक दायरे और दूरदराज के वैसे इलाकों में भी एक बड़ी आबादी रहती है, जहाँ तक स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच अपेक्षाकृत काफी मुश्किल रही है। फिर भी, जिन सीमित संसाधनों के तहत देश के स्वास्थ्य तंत्र में सुधार लाया गया और आबादी के ज्यादातर हिस्से की पहुँच बनाई गई, उसका सीधा असर लोगों की जीवन में सेहत की स्थितियों पर पड़ा। गौरतलब है कि हाल के वर्षों तक दुनिया–भर में पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर के मामले में भारत सबसे खराब स्थिति में था। यहाँ बच्चों की मृत्यु दर पूरी दुनिया के मुकाबले काफी ज्यादा थी। लेकिन इन दशकों के दौरान बचपन की सेहत को लेकर चलाए गए जागरूकता अभियानों से एक बड़ा बदलाव यह आया कि बेहद मामूली रोगों की चपेट में आकर जहाँ किसी शिशु या बच्चे की जान चली जाती थी, अब स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के चलते उनके जिंदा बच जाने की गुंजाइश बढ़ी है।

ख कोरोना के बढ़ते संक्रमण की चुनौती किस तरह गंभीर होती जा रही है, इसका प्रमाण है गृह मंत्रालय की ओर से राज्यों को नए सिरे से इसके लिए दिशा–निर्देश जारी करना कि इस महामारी पर अंकुश के उपायों पर सख्ती से अमल हो। ऐसे दिशा–निर्देश इसलिए आवश्यक थे, क्योंकि कई राज्यों में हालात बिगड़ते ही जा रहे हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि लोगों के स्तर पर जरूरी सजगता का परिचय नहीं दिया रहा है। जब यह स्पष्ट है कि वैक्सीन आने तक सजगता और सतर्कता के जरिए ही इस महामारी पर अंकुश लगाया जा सकता है तब इसके अलावा और कोई उपाय नहीं कि हर कोई मास्क पहनने और शारीरिक दूरी के नियम–कायदे के पालन के प्रति गंभीर हो। यह अच्छी बात नहीं कि मास्क पहनने जैसी बुनियादी अपेक्षा के प्रति भी गंभीरता नहीं दिखाई जा रही है। यह वह रवैया है जो इस महामारी से लड़ाई को कमजोर बना रहा है। पता नहीं क्यों लोग यह समझने के लिए तैयार नहीं कि सरकारों के पास ऐसी कोई जादू की छड़ी नहीं है जिससे कोरोना के प्रसार को एक झटके में रोक दिया जाए? कोरोना का संक्रमण तो एक ऐसी चुनौती है जो हर स्तर पर सतत सजगता और सतर्कता की माँग करती है।

गृह मंत्रालय की ओर से राज्यों को दिए गए दिशा–निर्देश के बाद लॉकडाउन जैसे उपायों को लेकर अस्पष्टता भी दूर हो जानी चाहिए। केंद्र ने जिस तरह यह स्पष्ट कर दिया कि कंटेनमेंट जोन से बाहर किसी क्षेत्र में लॉकडाउन के निर्णय के लिए उसकी सहमति आवश्यक है, वह उचित ही है। अब जैसे हालात हैं उनमें सामान्य रूप से लॉकडाउन सरीखे उपायों की आवश्यकता भी नहीं है। यह स्थानीय प्रशासन को सुनिश्चित करना होगा कि कोरोना पर अंकुश के लिए न केवल लोग सतर्कता बरतें, बल्कि परिस्थितियों के अनुरूप ऐसे उपाय किए जाएँ जिससे सार्वजनिक स्थलों पर भीड़ एकत्रित न हो। इसके लिए जो भी प्रशासनिक निर्णय आवश्यक हैं वे बिना किसी देरी के लिए जाने चाहिए। चूँकि यह साफ है कि कोरोना के खिलाफ लड़ाई लंबी चलने वाली है और कभी भी, कहीं भी संक्रमण बढ़ाने का खतरा बना हुआ

है इसलिए शासन–प्रशासन को सार्वजनिक स्थानों पर गतिविधियों के मामले में सतर्क रहने की आवश्यकता है।

ग हम बचपन से यह कहावत सुनते आ रहे हैं – मन चंगा तो कठौती में गंगा। इसका मतलब है कि यदि मन प्रसन्न हो तो अपने पास जो भी थोड़ा–बहुत होता है, वही पर्याप्त होता है। लेकिन, आज की परिस्थितियों में हमारा मन चंगा नहीं हो पा रहा है और स्वास्थ्य तथा खुशहाली की जगह रोक–व्याधि के चलते लोगों का जीवन अस्त–व्यस्त होता जा रहा है। लोग निजी जीवन में भी असंतुष्ट रह रहे हैं। संस्था तथा समुदाय के लिए भी उनका योगदान कमतर होता जा रहा है। समाज के स्तर पर जीवन की गुणवत्ता घट रही है और हिंसा, भ्रष्टाचार, दुष्कर्म, अपराध और सामाजिक भेदभाव जैसी घटनाएँ बढ़ रही हैं। चिंता की बात यह है कि इन घटनाओं के प्रति संवेदनशीलता भी घट रही है।

इस तरह के बदलाव का एक बड़ा कारण हमारी विश्व दृष्टि भी है। हम एक नए ढंग का भौतिक आत्मबोध विकसित कर रहे हैं, जो सब कुछ तात्कालिक प्रत्यक्ष तक सीमित रखता है। कभी हम सभी पूरी सृष्टि को ईश्वर के करीब पाते थे और सबके बीच निकटता देखते थे। आदमी सबके जीवन में अपना जीवन और अपने जीवन में सबका जीवन देखता था। इस नजरिए में सारा जीवन केंद्र में था, न कि सिर्फ मनुष्य। मनुष्य की मनुष्यता उसके अपने आत्मबोध के विस्तार में थी और वह सबकी चिंता करता था। आदमी सिर्फ धन–दौलत ही नहीं, बल्कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों लक्ष्यों की उपलब्धि के लिए सचेष्ट रहता था। लेकिन आधुनिक चेतना ने धर्ममुक्त समाज की कल्पना की और मनुष्य की बुद्धि को चैतन्य के भाव से मुक्त कर दिया तथा सबको भौतिक सुख के साधन जुटाने में लगा दिया। इसके नशे में सभी दौड़ रहे हैं, पर दौड़ पूरी नहीं हो रही है और अतृप्ति की वेदना से सभी आहत हैं। इस मिथ्या मरीचिका के असहनीय होने पर लोग आत्महत्या तक करने को उद्यत होने लगे हैं।

*****